— तृतीय अध्याय —

"राग-दरबारी" उपन्यास के पात्र

"राग-दरबारी" उपन्यास के पात्र

चरित्र-चित्रण के तत्व :-

आधुनिक उपन्यास में चरित्र-चित्रण को सबसे अधिक महत्व प्रदान किया जाता है। उपन्यास मानव जीवन का चित्रण है, अतः मानव चरित्र का विश्लेषण उसकी रोचकता और रमणीयता का प्रधान कारण हो जाता है। यथार्थ और समुचित प्रभाव के साथ चरित्र-चित्रण करना उपन्यासकार की सफलता का द्योतक है।

सफल चरित्र-चित्रण में तीन तत्व रहते है।

तीन तत्व — १) चरित्र का व्यक्तित्व
२) चरित्र के बौध्दिक गुण
३) चरित्रके चारित्रिक गुण

१) चरित्र का व्यक्तित्व :-

उपन्यास के प्रथम तत्व में चरित्र के व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण माना है। सफल उपन्यासों में पात्र के व्यक्तित्व का स्पष्ट चित्रण होना अनिवार्य है। व्यक्तित्व के भीतर पात्र का आकार, रूप, रंग, वेश-भुषा आदि को सम्मिलित रहता है, जिसके द्वारा हम उसे पहचानते है। यदि उपन्यास के भीतर इन बातों का विवरण नहीं हो तो हम अपनी कल्पना और अनुभव के आधारपर उसके व्यक्तित्व को एक रूप बना लेते है। यह व्यक्तित्व जितना ही प्रभावशाली हो तथा अन्य सजातीय पात्रों से भिन्न जान पडे उतनाही अच्छा होता है।

२) चरित्र के बौध्दिक गुण :-

बौध्दिक गुणों के भीतर उसका अध्ययन, चतुरता, संकट में बुध्दिवैभव आदि विशेषतायें आती है। इसके उनके गुण यदि लोक-कल्याणकारी हुए तो हम सम्मान और प्रशंसा करते है और यदि अकल्याणकारी है, तो हम निन्दा करते है। इन गुणों का हमारे उपर प्रभाव पड़ता है।

३) चरित्र के चारित्रिक गुण :-

उपन्यासोंकी चरित्र-चित्रण में पात्रों के चारित्रिक गुणों की ओर उपन्यासकार का ध्यान अधिक रहना चाहिए। चरित्रों के गुणों तथा कार्यों में समानता होनी चाहिए। विशीष्ठ गुणों के ही कारण कोई भी चरित्र प्रभावपूर्ण बनता है। पात्र के चारित्रिक गुणों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। उसके भीतर दूसरों के सुख में सुखी और दुख में दुखी होने की कितनी शक्ति है, वह कितना संवेदनशील और भावुक है, परिस्थितियों का घात-प्रतिघात सहकर भी उसमें कितनी करुणा और सहृदयता है इन बातों से ही हमारा ध्यान उनके प्रति प्रेम या घृणा का भाव जागृत करता है। चारित्रिक विशेषताओं में उसके आचरण और दूसरों के प्रति व्यवहार को परखा जाता है।

अतः इन तत्वों का प्रत्यक्ष स्पष्टीकरण उपन्यासकार की कुशलता का अंग है।

चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ :-

आधुनिक काल में उपन्यास के चरित्र-चित्रण को उपन्यास का प्राणतत्व माना है। उपन्यास की असफलता चरित्रों के गुणों तथा कार्यों से ही निहीत रहती है। उपन्यासकार अपने उपन्यास को सफल बनाने के लिए पात्रों का चरित्र-चित्रण विविध प्रणालियों से करते है। चरित्र-चित्रण करने की अनेक प्रणालियाँ है जिनमें प्रमुख तीन है —

१) वर्णनात्मक प्रणाली
२) विश्लेषणात्मक प्रणाली और
३) नाटकीय प्रणाली।

१) <u>वर्णनात्मक प्रणाली</u> :-

वर्णनात्मक प्रणाली का प्रयोग उपन्यास में सबसे अधिक किया जाता है। इन प्रणाली में लेखक पात्रों की शारीरिक रचना, वेशभूषा, स्वभाव आदि का परिचय देते हुए उनके कार्यव्यापारोंपर टिप्पणी करता चलता है।

२) <u>विश्लेषणात्मक प्रणाली</u> :-

इस प्रणाली में उपन्यासकार पात्रों के भावों, विचारों एवं संवेदनाओं का विश्लेषण कर इनसे उनके बाह्य कार्यव्यापारों एवं आचरण की संगति बैठाता है। वस्तुतः वह पात्र के मनोविज्ञानपर जोर देता है।

३) <u>नाटकीय प्रणाली</u> :-

नाटकीय प्रणाली में पात्र की स्थिति रंगमंच के अभिनेता सी होती है और पाठकों की स्थिति निर्णयकों की सी होती है। लेखक पार्श्व में रहकर पात्रों को को शब्द, हावभाव एवं गतिविधियाँ प्रधान करता चलता है।

इसप्रकार उपन्यास में प्रमुख इन तीन प्रणालीयों का प्रयोग किया जाता है। उपन्यासकार को पुरी स्वतंत्रता है कि वह किस प्रणाली का प्रयोग करे, किन्तु किसी एक प्रणाली का दास बन जाना भी अनुचित है। प्रतिभावान उपन्यासकार सभी प्रणालियोंपर अधिकार प्राप्त कर अपनी उपन्यास कला का विकास करते है। इसके विपरित द्वितीय या तृतीय श्रेणी का लेखक अपनी ही बनाई हुई एक निश्चित लीक पर चलता हुआ अपनी साहित्यिक अकाल मृत्यु को आमंत्रित कर होता है।

इसप्रकार चरित्र-चित्रण के तत्वों का और चरित्र-चित्रण की प्रणालियों का संक्षेप में विवेचन किया गया है।

चरित्र-चित्रण के तत्वों और प्रणालियों के आधारपर "राग-दरबारी" का विवेचन :-

"राग-दरबारी" श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास में अधिक पात्र है। लेकिन सब पात्र अपनी अलग-अलग विशेषताओं के साथ प्रकट होते है। चारित्रिक विशेषताओं की दृष्टि से यह उपन्यास सफल बन चुका है। उन पात्रों के माध्यम से लेखक अपने उद्‌देश तक पहुँच जाता है।

"राग-दरबारी" में पात्रों की विविधता और विपुलता है। अनेक स्तर के, अनेक प्रवृत्तियों के, अनेक प्रकार की उम्र के असंख्य पात्र उपन्यास में प्रस्तुत है। कुसहर और छोटे, वैद्यजी और रूप्पन पिता-पुत्र के जोड़े है। लेखक ने इन पात्रों के द्वारा नई और पुरानी पीढ़ी के अंतर को समझाया है। क्या इन पात्रों का चरित्र गाँव का प्रतिनिधी माना जा सकता है ? हमारे मन में अवश्य माना जा सकता है। उपन्यास के प्रधान पात्रों में रंगनाथ, रूप्पन, वैद्यजी, मोतीराम, सनीचर, गयादीन, प्रिंसिपल आदि का चित्रण लेखक ने विस्तृत रूप से एवं प्रभावशाली ढंग से किया है।

"राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित प्रमुख पात्रों का विवेचन चरित्र-चित्रण के तत्वों और प्रणालियों के आधारपर निम्नलिखित है।

१) रंगनाथ :-

"राग-दरबारी" उपन्यास का प्रमुख पात्र रंगनाथ है। आत्मकेन्द्रित व्यक्तित्व का धनी रंगनाथ निष्क्रिय मनोवृत्ति का युवक है। वह शिक्षित किन्तु अकर्मण्य युवावर्ग का सदस्य है। उसने एम.ए. पास की है। वह रिसर्च कर रहा है। स्वास्थ्य सुधारणे के लिए वह अपने मामाजी के गाँव शिवपालगंज में आता है। लेकिन धीरे-धीरे शिवपालगंज का वातावरण उसे अलग ही ...ाई देता है। इसी-कारण उसे कुछ ही दिनों में शिवपालगंज के विषय में ऐसा लगने लगता है कि महाभारत

की तरह जो कहीं नहीं है, वह यहाँ है, और जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। शुक्ल जी ने रंगनाथ के बाह्य वर्णन याने रंग, वेशभूषा आदि की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। बल्कि अंतरंग चित्रण की ओर ही अधिक बल दिया है।

शोधप्रज्ञ रंगनाथ स्वयं मँझोली हैसियत का विश्व-विद्यालयी युवक है जो शिवपालगंज के उस कीचड़ में फँस गया है। जहाँ कमल नहीं केवल कर्दम है। शिवपालगंज के गंजहों की करतुतों को पहले वह कुतुहल की दृष्टि से देखता और बाद में कुत्सा की। रंगनाथ उस व्यवस्था को वरण करने में असमर्थ रहता है। वह उस दिशाहीन युवा पीढ़ी का युवक है जो आज की व्यवस्था के विघटित मूल्यों को भी नहीं ओढ़ सकता और न अपने व्यक्तित्व के विघटन पुर्णाकरण को ही रोक सकता है बल्कि ऐसा प्रतित होता है वह चुके हुए अवसरों का आदमी है।

वह बुध्दिजीवी है, यानी कुछ ज्यादा पढ़ा लिखा है। परंतु उसमें क्रांति का उत्साह मृतप्राय होने कारण अंत में वह पलायन करता है। वह अत्यंन्त ही दुर्बल है। उसमें न तो आत्मोपलब्धि का सामर्थ्य है और न ही सत्यान्वेषण की प्रवृत्ति है। वह उदासीन और निर्जिव सा होकर ही वह जीवित है। इसीलिए रंगनाथ सब कुछ गलत व्यवस्थाओं को देखता हुआ भी सभी स्थिति को स्वीकारता जाता है।

रंगनाथ के बारे में कमलेश का मत भी डॉ॰ शांतिस्वरुप गुप्त से मिलता-जुलता है। कमलेश का कथन है कि, —

" संशय नई पीढ़ी के लोगों में खास तौर पर, शहराती बाबु रंगनाथ में उदित होता है और वे प्रिंसिपल खन्ना मास्टर के झगड़े में पक्षकार होने लगते है, पर अंतत: उनके हजारेंा में भी पलायन संगित बजने लगता है। श्री रंगनाथ ने पुरे चरित्र में भारतीय शहराती बुध्दिजीवियों अकर्मण्यता और अज्ञान का हुबहू चित्र पेश किया है। यह बुध्दिजीवी लड़ाई शुरू करता है पर संघर्ष का अवसर आने पर फिर शहर की ओर पलायन करता है।" [१]

इसप्रकार श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" इस उपन्यास में रंगनाथ के व्यक्तित्व का सफल चित्रण किया है। उपन्यासकारने उसके चरित्र के गुण-दोषों का चित्रण उसके व्यक्तित्व के अनुसार किया है। उसके बाह्य वर्णन की ओर अधिक ध्यान हीं दिया है। वह बुध्दिजीवि जरूर है, उसमें गुण भी अधिक है लेकिन परिस्थितियों से सामना करने की शक्ति उसमें नहीं है। अंत में शिवपालगंज का भ्रष्ट वातावरण और वैद्यजी के कार्यों को देखकर वह पलायन करता है -- यहाँ उसमें दोष दिखाई देता है।

उपन्यासकारने रंगनाथ का वर्णन वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

२) <u>वैद्यजी</u> :-

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" उपन्यास के दुसरे उल्लेखनीय पात्र है — वैद्यजी। वैद्यजी कॉलेज, पंचायत और को-ओपरेटिव समिति के माध्यम से त्रिकोणात्मक क्रांति कर रहे है। उनके चरित्र में पवित्रता नहीं वरन् उपयोगितावादी दर्शन की प्रधानता है। उनकी वाग्देवी अत्यन्त ही प्रखर व प्रचण्ड है। वे छद्म् आदर्शों के बाह्य आडम्बरों तथा अभ्यन्तर में कुटिलताओं की प्रतिमूर्ति ही है। निस्संदेह रूप से आज के नेता वर्ग के वे प्रभावशाली प्रतिक है। वैद्यजी का व्यक्तित्व विविध गुणों से सम्पन्न है। वैसे तो वैद्यजी इस उपन्यास के केंद्रिय पात्र है। वैद्यजी के चरित्र-चित्रण में शुक्ल जी ने बाह्य चित्रण याने रंग, रूप, वेशभुषा की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है बल्कि उसके अंतरंग चित्रण की ओर अधिक ध्यान दिया है। इस चरित्र के गुण-दोषों का चित्रण स्पष्ट रूप से किया है।

कहा जाता है कि, वैद्यजी के ईशारे के बिना शिवपालगंज मे पेड़ का पत्ता भी नहीं हिल सकता। वे विशुध्द अवसरवादी नेता है। भारत के युवा वर्ग के लिए उनके पास ब्रह्मचर्य की अचुक दवा है। अर्थोपार्जन के लिए उनके पास दो उपाय है - गरीबों की निःशुल्क चिकित्सा और लाभ न होने की अवस्था में दाम लौटाने का

सिध्दांत। लेकिन उन्होंने कभी किसी का मुफ्त में इलाज नहीं किया। इस व्यवसाय के अतिरिक्त वे ग्राम-सेवा भी करते है और इसलिए छंगामल इन्टर साईंस कालेज के मैनेजर, ग्रामीण सहकारी समिति के डाइरेक्टर तथा ग्रामपंचायत के सर्वेसर्वा है। वे शिवपालगंज के एकछत्र शासक है।

वैद्यजी कॉलेज, पंचायत और को-आपरेटिव समिति के माध्यम से त्रिकोणात्मक क्रांति कर रहे है। उनमें दुर्वासा का क्रोध, हिटलर की तानाशाही और नेहरू की सी मुस्कुराहट है। उनके चरित्र में पवित्रता नहीं वरन् उपयोगितावादी दर्शन की प्रधानता है।

आधुनिक ढोंगी नेताओं का पर्दाफाश लेखकने वैद्यजी के रूप में निर्ममता से किया है। भ्रष्टाचार और अनैतिकता का वह मानवी रूप पद-पद पर प्रेम, अहिंसा जैसे शब्दों का प्रयोग करता है। "राग-दरबारी" उपन्यास में वैद्यजी शिवपालगंज के सुत्रधार है। गाँव की सभा पर कब्जा करने के लिए वो अपने ही नौकर सनिचर को प्रधान निर्वाचित करा देते है। उनके दो बेटे रूप्पन और बद्री उन्हीं की थैली के चट्टे-बट्टे है, जो शरारत और लाठी के बलपर वैद्यजी के साम्राज्य के विस्तार में योगदान करते है। वैद्यजी के विरोधी कॉलेज की जाँच करवाना चाहते है, लेकिन ऊपर तक पहुँच होने के कारण विरोधियों को मुँह की खानी पड़ती है।

अत: वैद्यजी के बारे में कहा जा सकता है कि, वैद्यजी उस आम हिन्दुस्तानी नेता का प्रतिनिधित्व करते है जिन्हें भ्रष्ट राजनीति ने बरसाती मेंढकों की तरह पैदा किया है।

अत: "राग-दरबारी" में वैद्यजी के व्यक्तित्व का सफल निर्वाह हुआ है। उपन्यासकारने उनके गुण-दोषों के साथ उनके कार्योकलापों का सफल चित्रण प्रस्तुत किया है। वैद्यजी का चित्रण वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

३) रूप्पन बाबू :-

शिवपालगंज के नेता वैद्यजी के दो बेटे है। उनमें से रूप्पन बाबू एक है। रूप्पन बाबू आवारा और अनुशासनहीन विद्यार्थी वर्ग के प्रतिनिधि है। वह अपने पिता के कार्य में अपने भाई बद्री पहलवान के साथ योगदान देनेवाला ही हैं। दसवीं दर्जे में तीन वर्ष अनुत्तीर्ण होने के बाद भी वह कॉलेज का छात्र है।

हर समय गले में रूमाल, मुँह में पान और बालों से टपकता तेल और जबान पर सिनेमा के गन्दे गीत, मुँहफट यही रूप्पन का बाह्य व्यक्तित्व है।

रूप्पन बाबू स्थानीय नेता होने के कारण वह सबको दयनीय ही समझता है और उन्ही के साथ वैसा ही व्यवहार करता है। सबका काम तो करते है परंतु सबसे दाम लेकर ही। उनकी नेतागिरी का प्रारंभिक और असली क्षेत्र वहाँ का कॉलीज है। वे पैदायशी नेता होने के कारण उन्हें अपने पिता के चारित्रिक कुकर्मी हथकण्डों से गहरा परिचय है। उनके बाप वैद्यजी भी एक नेता ही है। इसीकारण व्यापारी गयादीन की पुत्री बेला को प्रेम पत्र लिखकर उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए लालायित रहते है।

रूप्पन बाबू की मान्यता है कि इस देश की शिक्षा पध्दति बेकार है और कॉलेज के अध्यापक भी पढ़ाना-लिखाना छोड़कर एक दूसरे के विरूध्द सिर्फ षड्यन्त्र रचते हैं। वैसे तो रूप्पन बाबू को विशेषाधिकार प्राप्त है क्योंकि वे वैद्यजी के बेटे है। मास्टर और प्रिंसिपल उनसे डरते है क्योंकि वे किसी की भी हुलिया टाइट कर सकते है। छरहरे बदनवाले रूप्पनबाबू धोती या पाजामा पहने सभी जगह दिखाई पड़ते है। पिता की छत्रछाया सिर पर होने के कारण सात खुन माफ है। कुछ बातों में वे अपने पिता से मत वैमनस्य रखते है, लेकिन अन्ततः पिता के निर्णय को मान्य करते है। युवक होने के कारण जवानी का जोश और उतावलापन अधिक है। गाँववालों को आपस में लड़वाकर अपना उल्लू सीधा करने में रूप्पनजी सिध्दहस्त है।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि, रूप्पन बाबु आवारा और अनुशासनहीन विद्यार्थी-वर्ग के प्रतिनिधि है। एक नवयुवक, प्रेमी, गुटबध्दता - पोषक और आवार-

BARR. BALASAHEB ... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY ...

गर्द पिता के अधिकार का दुरुपयोग करनेवाला आदि इस रूप में उपन्यास में चित्रित है।

इसप्रकार शुक्ल जी ने रुप्पन बाबू के व्यक्तित्व के दोनों ही पहलुओंपर प्रकाश डाला है। उसका बाह्य और अंतरंग चित्रण उसके क्रियाकलापों के अनुसार किया है। रुप्पन के गुणों का और दोषों का सही निर्वाह इस उपन्यास में हुआ है।

रुप्पन के चरित्र-चित्रण में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग शुक्ल जी ने किया है।

४) <u>बद्री पहलवान</u> :-

श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित "राग-दरबारी" इस उपन्यास में वैद्यजी के प्रथम बेटे का नाम बद्री है। वह एक बड़े पहलवान का प्रतिक है। उन्होंने पढ़ाई नहीं की। बद्री पहलवान का एक अखाड़ा है। इनका विश्वास है - "लाठी में गुण बहुत है, सदा रखिए संग" में है। अपनी लाठी और भाई रुप्पन के बुध्दि के योग से शिवपालगंज की समस्याएँ हल कर लेने में वे उस्ताद है। बद्री पहलवान गुंडे के प्रतिक माने जाते है। वे अपनी शक्ति का प्रयोग ज्यादातर डकैती के लिए ही करते है। उनके पिता वैद्यजी के कहने के अनुसार "गुंडे लोगों को, जो उनके काम आते है," रक्षा करना बद्री पहलवान का काम है। बद्रीने अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कि बल्कि अपने पिता के काम में ही अधिक सहयोग देना - उन्होंने अच्छी शिक्षा उसे ही समझा है। बद्री पहलवान के चरित्र-चित्रण में शुक्ल जी ने बाह्य चित्रण याने रंग, रूप, वेशभूषा आदि की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है बल्कि उसके अंतरंग चित्रण पर ही अधिक ध्यान दिया है।

उन्होंने अपने अखाड़े में अनेक पहलवानों को तैयार किया उसमें से छोटे पहलवान उनके ही शिष्य है। उपन्यास के अंतिम क्षणों तक वह बद्री को ही सहयोग देता है। तणावपूर्ण परिस्थिति में वैद्यजी को बद्री पहलवान ने ही सहारा दिया

है। छंगामल इंण्टर कॉलेज के प्रधान वैद्यजी है। लाठी के बल पर उन्होंने वैद्यजी को ही प्रधान चुना। एक बार वैद्यजी बहुत दु:खी थे उनके दुखी होने की पहचान यह थी कि उनका साफा कुछ ढीला हो जाता, मूँछे बेतरतीब हो जाती और हर तिसरे वाक्य के बाद वे कहने लगते, "मैं क्या बताऊं, जो मन में आये, करो!" उसीपर बद्री पहलवान कहते बस, ये झगड़े तो दस मिनट में खत्म हो जायेंगे और तुरंत ही अपना काम शुरू करते।

बद्री पहलवान ताकत के बलपर वैद्यजी के दरबार को बनाए रखने में हमेशा मदत करते रहे। जैसे, "ये झगड़े तो दस मिनट में खत्म हो जायेंगे। को-आपरेटिव इन्सेपेक्टर को दस जुते मार दिए जायें, ठीक हो जायेगा। डिप्टी डाइरेक्टर न माने और जाँच करने आये तो उसका भी किसी से भरत-मिलाप करा देगें। खन्ना मास्टर के लिए हुकुम कर देगें। कि वे और उनकी पार्टी के लोग कॉलेज के अन्दर जायें, सबको बराबर गैरहाजिर बनाकर पन्द्रह दिन के बाद निकाल बाहर कर देंगे। रंगनाथ चाहे जितना गिचिर-गिचिर करे, उसकी फिक्र क्या? शहर का आदमी है। सुअर का-सा लेंड-न लीपने के काम आये, न जलाने के तुम उधर देखो ही नहीं, घबराकर वापस भाग जाएगा।" २

बद्री पहलवान अंत में, को-आपरेटिव युनियन की सभा में दरोगा जीको अतिथि बनाते है और चाल-चलाकर वैद्यजी त्यागपत्र देते है और बद्री पहलवान को-आपरेटिव युनियन के डाईरेक्टर बन जाते है।

"राग-दरबारी" इस उपन्यास में बद्री पहलवान एक उच्च गुंडे के प्रतिक माने गये है। उन्होंने पहलवान के पद का पुरा लाभ उठाया।

"राग-दरबारी" में बद्री पहलवान का व्यक्तित्व विविध रूपों में उभरकर सामने आया है। उपन्यासकारने बद्री पहलवान का चरित्र-चित्रण उसका व्यक्तित्व एवं बौध्दिकता को ध्यान में रखकर किया है। बद्री का कार्य उसके व्यक्तित्व के अनुसार है। शुक्ल जी ने बद्री का चरित्र-चित्रण विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

५) प्रिंसिपल :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास का प्रिंसिपल गौण किन्तु महत्वपूर्ण पात्र है। श्रीलाल शुक्ल ने इस पात्र के माध्यम से आधुनिक संस्था प्रमुखों की आर्थिक विपन्नता और पारिवारिक बोझ की चक्की में पिसनेवाले व्यक्तियों का चरित्र खिंचा है। प्रिंसिपल नौकरी के लिए स्वाभिमान छोड़कर वैद्यजी की चमचागिरी को अपनाता है।

वैद्यजी की जी हुजुरी करना ही वे अपना परम धर्म मानते है इसलिए रूप्पन की दादावादी मनोवृत्ति का वे विरोध नहीं करते। प्रिंसिपल के चरित्र-चित्रण में शुक्ल जी ने बाह्य चित्रण याने रंग-रूप, वेशभूषा आदि की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है, बल्कि उसके अंतरंग चित्रणपर ही अधिक ध्यान दिया है।

शिक्षा के क्षेत्र में सामान्य प्रिंसिपल की हालत फिर भी ठीक है क्योंकि वाइस चांसलर की अवस्था तो इससे भी बद्तर है। प्रिंसिपल रंगनाथ से कहता है — " वाईस चांसलर के बजाय प्रिंसिपल की नौकरी मुझे पसन्द है, क्योंकि वह दस लोगों के सामने सिर झुकना पड़ता है,यहाँ केवल वैद्यजी के सामने ही। " [3]

प्रिंसिपल को रंगनाथ के बारे में कोई रूचि नहीं। लेकिन वैद्यजी का रिश्तेदार होने के नाते वह प्रो. खन्ना की जगह रंगनाथ को देकर अपनी नौकरी पक्की करना चाहता है। प्रिंसिपल का राग अलग ही ध्वनित होता है। वह वैद्यजी का अंधसमर्थक है। वैद्यजी का वरद हस्त भी उसे प्राप्त है। इसीलिए मास्टर खन्ना के अधिकार व माँग पत्रों को वह ठुकरा देता है। उनके विरूध्द अदालती कार्यवाही करता है और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देता है कि अंत में मास्टर खन्ना को त्यागपत्र देना ही पड़ता है।

आर्थिक शोषण के इस युग में अपनी वैयक्तिकता की रक्षा करना असम्भव है। इसीलिए वैद्यजी का अनुगामी बना हुआ प्रिंसिपल उच्चकोटी का पिछड़भार है जो चाटुकारिता के बलपर अपने अधिनस्थ अध्यापकों का शोषण करता है और प्रशासकीय निरंकुशता और नोकरशाही आतंक का पर्याय बन जाता है।

प्रिंसिपल के माध्यम से शैक्षणिक जगत् के रिश्वतखोरी, स्वार्थपरता, गुटबन्दी जैसे दोषों का व्यंग्य के सहारे चित्रण किया गया है। शुक्ल जी ने उनका चरित्र-चित्रण वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

६) गयादीन :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास के गौण पात्र गयादीन, शिवपालगंज के प्रतिष्ठित नागरीक है। छंगामल इंटर साइंस कॉलेज के प्रबन्ध समिति के वे उपाध्यक्ष है लेकिन वैद्यजी की शोषक और आतंकपूर्ण कार्यवाही तथा प्रिंसिपल की अवसरवादी कार्यवाही के विरुध्द कुछ भी करने को तैयार नहीं है।

उनकी पुत्री बेला का विवाह इसलिए नहीं हो पाता कि दहेज की समस्या अत्यन्त ही प्रचंड है। गयादीन भी दूहरा जीवन भोगते है। एक तरफ विशुध्द सात्वीक प्रवृत्ति का प्रदर्शन करने के लिए उड़द की दाल इसलिए नहीं खाते क्योंकि उससे क्रोध आता है और दूसरी तरफ चुपचाप अपनी सुदखोरी का महाजनी व्यापार भी धड़ल्के से करते है।

अतः गयादीन इस उपन्यास में एक प्रतिष्ठित नागरिक, व्यापारी तथा कॉलेज प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष के रूप में आते हैं। उनका-चरित्र-चित्रण अधिकतर विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

७) रामाधीन भीखमखेड़वी :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास का रामाधीन भीखमखेड़वी गौण पात्र है। भीखमखेड़वी वैद्यजी के विरोधी है। रामाधीन भीखमखेड़वी इसी गाँव का रहनेवाला है। उन्होंने कलकत्ते में ही पहले व्यापारी के यहाँ चिठ्ठी ले जाने का काम किया, फिर माल ले जाने का, बाद में उन्होंने उसके साझे में कारोबार करना शुरू कर दिया। अन्त में वे पुरे करोबार के मालिक हो गये। उनका कारोबार अफीम का था। उन्हें अफीम के कारोबार में अच्छा पैसा आता

था इसीकारण वे दूसरे व्यापारियों से ज्यादा स्पर्धा भी रखते थे।

एक बार रामाधीन को अफीम के कारोबार क कारण दो साल की सजा हुई। सजा समाप्त होते ही वे अपने गाँव आकर रहने लगे और खेती करना शुरू किया। मकान बनवाकर वहाँ जुएँ का अड्डा चलाने लगे। पंचायत के चुनाव में अपने भतीजे को ही प्रधान निर्वाचित करवाकर पंचायत को अपनी जेब में रख लिया।

इसप्रकार "राग-दरबारी" में भीखमखेड़ी का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से चित्रित है। भीखमखेड़ी के चरित्र-चित्रण में बाह्य चित्रण की ओर ध्यान न देकर अंतरंग का ही चित्रण किया है। उनका चित्रण अधिकतर विश्लेषणात्मक शैली में ही किया है।

८) लंगड़ :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास का लंगड़ एक गौण पात्र है। वह एक ऐसा ईमानदार चरित्र है जिसे अपने परिवेश का तनिक भी ध्यान नहीं। वह यह नहीं जानता की सर्वत्र भ्रष्टाचार ही है। इसीकारण रिश्वत के रूप में पाँच रूपये न देकर वह जिन्दगी भर अपने खेत की मिसिल नहीं प्राप्त कर सकता। फिर भी वह आशावादी है। लंगड़ ऐसा आदर्शवादी है, जिसके लिए सत्युग कभी नष्ट नहीं होता और कलयुग कभी नहीं आता।

लंगड़ कहता है कि - यह धर्म और सिध्दान्त की लड़ाई है। मैं कायदे से ही नक्कल ले लूँगा। ऐसा करके वह मर जाता है, लेकिन नक्कल के कागजात को प्राप्त नहीं कर सका। लंगड के माध्यम से उपन्यासकार ने एक आदर्शवादी और ईमानदार चरित्र का चित्रण किया है।

तहसील कार्यालय के बाबु लोगों की रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार वृत्ति पर भी करारा व्यंग्य किया है।

शुक्ल जी ने लंगड़वा के बाह्य चित्रण पर अधिक जोर न देकर अंतरंग को ही अधिक महत्व दिया है। उसका अपने गुणों तथा कार्यो के साथ ही संबंध दिखाया है। उसका चित्रण विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

९) बेला :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास में एक ही स्त्री पात्र है बेला। बेला कालिज प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष गयादीन की लड़की है। वह क्वांरी कन्या है। बीस वर्ष की युवती होने के साथ-साथ ग्रामसेविका के सम्पर्क में आकर उसने फिल्मी गीतों में पत्र लिखना भी सीखा है। वह हमेशा घर में ही बन्द रहती है और जब बाहर निकलना होता है तो घरों की छतों को पार करते हुए प्रायः रुप्पन के यहाँ पहुँच आती है और उससे मिलकर पुनः लौट आती है।

सम्प्रति बेला यौनाचार की स्वच्छंदता का वह प्रतिक है। बेला के माध्यम से शुक्ल जी ने भारतीय समाज के नारी जगत् की विवाह प्रथा, दहेज समस्या प्रेम आदि बातों को उद्घाटित किया है। उसका विवेचन उपन्यासकारने वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

१०) मास्टर खन्ना :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास के मास्टर खन्ना एक गौण पात्र है। वे छंगामल इण्टर कालिज में इतिहास के लेक्चरर है। वे प्रिंसिपल के विरोधी है। प्रिंसिपल का और उनका पुराना झगड़ा है।

खन्ना मास्टर प्रिंसिपल की पद लेना चाहते है। बल्कि उसे बार-बार चेतावनी ही मिलती है। कालिज के प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष गयादीन से मदत माँगने जाते है, लेकिन वहाँ भी कोई मदत नहीं मिलती। खन्ना मास्टर के गुटबन्दी का परिणाम यह हुआ कि वैद्यजी के शब्दो में, —

" यह विद्यालय मेरा बनाया हुआ है। इसे मैंने अपने रक्त से सींचा है। आप दोनों पक्ष केवल वेतनभोगी है। यहाँ नहीं तो वहाँ जाकर अध्यापक हो जायेंगे। कहीं भी अध्यापक हो जायेंगे। अच्छा वेतन पाने लगेंगे। पर मैं यहीं रहूँगा। यह विद्यालय सफलतापूर्वक चला तो अपने को सफल मानूँगा। यह पार्टीबन्दी में नष्ट होने लगा तो अपने को नष्ट हुआ समझूँगा। मुझे कष्ट है, अपार कष्ट है। आन्तरिक व्यथा है। मेरी व्यथा आप लोग समझ न पाते।"[४]

परिमाणामतः मास्टर खन्ना वाइस प्रिंसिपल बनने के सपने देखते हुए प्रिंसिपल से उपझ जाते है और अंत में त्यागपत्र देने के लिए विवश हो जाते है। उनके व्यक्तित्व में गुण और दोष दिखाई देते हैं। उपन्यासकारने उनका चित्रण वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

११) <u>मास्टर मालवीय</u> :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास के मास्टर मालवीय गौण पात्र है। मालवीय उसी कॉलेज में अध्यापक है। वे भी खन्ना के साथ गयादीन से मदत माँगने गये थे। प्रिंसिपल मालवीय पर भी अत्याचार ही करता है। इस उपन्यास के अंतिम क्षणों तक मालवीय मास्टर और खन्ना मास्टर अपने अधिकारों की माँग करते है और हमेशा प्रिंसिपल से अपमानित होते है। उपन्यास के अंत में वैद्यजी खन्ना के साथ उन्हें भी त्याग-पत्र देने में विवश करते है।

इसप्रकार मालवीय एक असहाय, अत्याचार पीड़ित अध्यापक है। उनका चरित्र-चित्रण विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

१२) <u>मोतीराम मास्टर</u> :-

मोतीराम मास्टर "राग-दरबारी" इस उपन्यास का एक गौण पात्र है। वे छंगामल इण्टर कॉलेज में लेक्चरर है। वे खन्ना के गुट के नहीं है। उन्हें अपने पेशे से अधिक प्रेम अपने व्यवसाय से था। वह यह कि, वह आटा पीसने की

चक्की चलाता था। उसका अधिक ध्यान कॉलिज में रहते हुए अपने चक्की की ओर अधिक रहता था। छात्रों के साथ भी वें आटा चक्की के बारे में ही अधिक बोलते रहते है। वैसे मास्टर मोतीराम साइंस के अध्यापक थे लेकिन उनका बोलना अंग्रेजी तथा व्यवसाय के अनुरूप था।

इसतरह मास्टर मोतीराम स्वार्थी, पैसों के लोभी व्यक्ति के प्रतिक है। उनमें अध्यापक के गुण नहीं पाये जाते। उनका चरित्र-चित्रण विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

१३) छोटे पहलवान :-

शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास के छोट पहलवान गौण पात्र है। छोटे पहलवान एक खानदानी आदमी थे। उन्होंने बद्री पहलवान के अखाड़े से ही पहलवान की पदवी प्राप्त की थी। उन्हें अपने परदादा तक का नाम याद था और हर खानदाणी आदमी की तरह वे उनके किस्से बयान करते थे।

छोटे पहलवान के जवान हो जाने पर बाप-बेटों ने शब्दों का प्रयोग बन्द ही कर दिया। अब वे उच्च कोटी के कलाकारों की तरह अपना अभिप्राय छापों, चिन्हों और बिम्बों की भाषा में प्रकट करने लगे।

तात्पर्य यह कि, छोटे पहलवान एक गुंडे के प्रतिक और वैद्यजी का पाला हुआ कुत्ता माना गया है।

छोटे पहलवान एक गुंड व्यक्ति का प्रतिक है। उसका चित्रण वर्णनात्मक शैली में किया है।

१४) कुसहर प्रसार :-

"राग-दरबारी" उपन्यास के कुसहर प्रसाद एक गौण पात्र है। कुसहर प्रसाद छोटे पहलवान के पिता है। कुसहर प्रसाद कों दो भाई थे। कुसहर अपने भाइयों के वाग्विलास को न समझ पाते थे। जैसे बताया गया, वे कम बोलनेवाले

कर्मशील आदमी थे। रह-रहकर किसी को चुप-चाप मार बैठना उनके स्वभाव की अपनी विशेषता थी, जो इन आदमीयों के जीवन-दर्शन से मेल नहीं खाती थी। इसलिए अपने बाप गंगादयाल के मरने पर, कुछ साल बाद, वे अपने भाइयों से अलग हो गये। अभीष्ट बिना बोले हुए, लाठी के जोर से उन्होंने अपने भाइयों को घर के बाहर खदेड़ा।

इस उपन्यास में कुसहर और उसके बेटे छोटे का वैमनस्य ही दिखाया है।

१६) <u>सनीचर</u> :-

"राग-दरबारी" उपन्यास के सनीचर गौण पात्र है। सनीचर वैद्यजी के बैठक में भंग घोटने का काम करता था। वह बनियान और धारीदार अण्डर-वियर पहनता था। उसका नाम मंगल था, पर लोग, उसे सनीचर कहते थे। उसके बाल पकने लगे थे और आगे के दाँत गिर गए थे। उसने अधिक पढ़ाई नहीं की थी। ग्राम्य तथा "गंजहे" के शब्दों का प्रयोग अधिक करता था। वह वैद्यजी का ही चेला था। वैद्यजी ने बाद में उसे ग्राम-सभा का प्रधान निर्वासित करना चाहा। चुनाव के समय महिपालपुर की पध्दती को अपनाकर सनीचर, जो भंग घोटने का काम करता था, प्रधान बन ही गया। शिवपालगंज का प्रधान बनने पर सनीचर के रहन-सहन, पोषाक और बोलने की शैली में परिवर्तन आया। एक प्रधान पद की इज्जत बनाए रखते हुए सनीचर अपने काम में ध्यान देता है। सनीचर एक असभ्य व्यक्ति होकर भी भ्रष्ट राजनीति के कारण ग्राम-सभा का प्रधान बन गया।

शुक्ल जी ने सनीचर का चरित्र-चित्रण बाह्य और अंतरंग दोनों ही रूपों में किया है। उसके चरित्र-चित्रण में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखत "राग-दरबारी" उपन्यास में इसके अतिरिक्त अनंत पात्र है। कालिका प्रसाद सरकारी अनुदान का भक्षण करने में निष्णात है। जोगनाथ एक गुंडा है वे वैद्यजी के दरबार के खास आदमी रामस्वरूप को-ऑपरेटिव

युनियन के सुपरवाइजर है। शिवपालगंज में गेहुँ में भ्रष्टाचार करके गायब है। पुलिस थानेकेअनेक दारोगाजी लोगो का चित्रण भी इस उपन्यास में किया है। वह अब दारोगाजी अपने-अपने अलग भ्रष्ट कृत्यों के लिए प्रसिध्द है। वैद्यजी के दरबार में घुल-मिल गए है।

पात्रों के चरित्र-चित्रण में लेखकद्वारा किया गया वर्णन ही सहायक है। वह सारा का सारा वर्णन हास्य और व्यंग्य के तीव्र लहजे में किया गया है। पात्र की शारीरिक रचना, हाव-भाव आदतें, वेशभूषा, गुण-अवगुण सभी का बखान लेखक ही करता है। ट्रक ड्रायवर रंगनाथ को ध्यान से देखता है। रंगनाथ का वर्णन लेखकने इसप्रकार किया है —

> " अहा ! क्या हुलिया था। नवकंज लोचन कंजमुख करकंज पद कंजारूणम्। पैर खद्दर के पैजामें में, सर खद्दर की टोपी में, बदन खद्दर के कुर्ते में। कन्धे से लटकता हुआ मुदानी झोला। हाथ में चमड़े की अटैची। ड्राइवर ने उसे देखा और देखता ही रह गया। " [४]

श्रीलाल शुक्ल जी ने पात्रों का चित्रण मखौल उड़ाने की शैली में किया है। कुछ आलोचकों को वह शैली उबाऊ लगती है। कहीं-कहीं मखौल उड़ाने के बदले सपाट-बयानी और व्यंग्य से काम लिया है। जैसे इस उदाहरण में —

> " वैद्यजी थे, है और रहेंगे। " [५]

सामाजिक उपन्यास के लिए यह जरूरी है कि लेखक "सर्वज्ञ" बनकर वर्णन के सारे सुत्र अपने हाथ में रखे। लेखक की मुद्रा मखौल उड़ानेवाले विदूषक ही होने के कारण पात्रों का अन्तर्जगत खुल नहीं पाता है। पात्रों की ओर से लेखकही वकील की तरह बोलता जाता है, पात्र खामोश रह जाते है। उनकी खामोशी उनके व्यक्तित्व को ढँके रहती है। यह भी नहीं कि "राग-दरबारी" के सभी पात्र भ्रष्ट है। भ्रष्ट लोगों की संख्या सीमित है, वे सूत्रधार है और शेष निरीह कठपुतलियाँ, जो विरोध करने का साहस नहीं जुटा पाते है, जो विरोध करते है वे भ्रष्टाचार के काले दायरे में घिर कर टुट जाते है - नतीजा है — पलायन संगीत।

इस उपन्यास में प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त वहाँ का छंगामल विद्यालय, पुलिस-थाना, यातायात व्यवस्था, मलेरिया आन्दोलन, मेला-ठेला, वैद्यजी की कस्बाती दुकानें, पंचायती चुनाव, न्याय पंचायतों का कौड़िला छाप न्याय, नेताओं की झाँसापट्टी, यौनाचार अंधविश्वास इत्यादि सभी अपनी-अपनी कहानी कहते है। देश की व्यवस्था को उद्घाटित करने में ये सभी पात्र किसी से कम नहीं है।

यथार्थतः "राग-दरबारी" राष्ट्रीय विकृतियों का बृहद कोश है।

इसप्रकार सारा उपन्यास वर्तमान भारतीय, सामाजिक संदर्भो का स्पष्ट उद्घाटन करता है। भारतीय,सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक गतिविधियों का दस्तावेज यह उपन्यास व्यक्ति चरित्रों के साथ डक वालों की मस्करी, पुलिस की बाह्यडम्बरी स्थितियाँ, छिछली राजनीति, थानों की प्राचीन पध्दतीयाँ, रक्षकों की सतर्कता, संसद की बहसें, आधुनिक रचनाओं की निरर्थकतायें आदि हर वर्ग की कहानी लिए है। सम्पूर्ण व्यवस्था में हर वर्ग, हर व्यवस्था पर व्यंग्य है।

"राग-दरबारी" उपन्यास के सभी पात्र अपना वैयक्तिक स्वातंत्र्य चाहते है। सभी पात्रों को घर-परिवार, मानव-सम्बन्ध या सामुहिकता जैसी चीजों से कोई सम्बन्ध नहीं है। पात्रों का सहज और नैसर्गिक चित्रण करने में शुक्ल जी सफल रहे है। लेखक ने उपन्यास में किसी आदर्श स्थिति की कल्पना नहीं की है, ग्रामीण यथार्थ प्रस्तुत किया है।

श्रीलाल शुक्ल ने शिवपालगंज तथा शिवपालगंजीय प्रवृत्तियों का उद्घाटन अपना उद्देश्य समझा है। अतः मुनष्य के मन के भीतर छिपे हुए सूक्ष्म से सुक्ष्म पहलुओंको संवाद के माध्यम से ही उद्घाटित कर खोखले मनुष्य के कृत्रिम रूप को उजागर किया है।

सामान्यतः रूप्पन, वैद्यजी, सनीचर, लंगड, खन्ना, प्रिंसिपल के चरित्र संवादो माध्यम से अंकित है।संवाद, घटना, वातावरण,अवसर और पात्रानुकूल है।

निष्कर्ष :-

श्रीलाल शुक्ल जी कृत "राग-दरबारी" एक सफल ग्रामीण सामाजिक व्यंग्यात्मक उपन्यास है। इस रचना में पात्रों की विविधता और विपुलता है। अनेक स्तर के, अनेक प्रवृत्तियों के अनेक प्रकार की उम्र के असंख्य पात्र उपन्यास में प्रस्तुत है। लेखक ने इन पात्रों के द्वारा नई और पुरानी पीढ़ी के अंतर को समझाया है। उपन्यास के प्रधान पात्रों में रंगनाथ, रुप्पन, वैद्यजी, मोतीराम , सनीचर, गयादीन, प्रिंसिपल आदि का चित्रण लेखक ने विस्तृत रूप से एवं प्रभावशाली ढंग से किया है।

उपन्यासकारने इस उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण उनके बाह्य और अंतरंग को ध्यान में रखकर किया है। यह उपन्यास सामाजिक तथा ग्रामीण-जीवन की विविध समस्याओंका लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। शुक्ल जी ने "शिवपालगंज" को सामने रखकर वर्तमानकालीन भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक क्षेत्र में व्याप्त विषमताओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। उनका उद्देश इन विषमताओंपर व्यंग्य करना है। इसलिए शुक्ल जी ने पात्रों के बाह्य रूप पर अधिक जोर न देकर उनके अंतरंग चित्रण में गुण-दोषों का सफल चित्रण किया है। चरित्र के विशेषताओं के अंतर्गत उनके व्यक्तित्व और बौध्दिक गुणों को स्पष्ट किया है। यह उपन्यास व्यंग्यप्रधान उपन्यास होने के कारण पात्रों के चारित्रिक गुणों की ओर ही अधिक ध्यान नहीं दिया है। इस उपन्यास के सभी पात्र निम्न सामाजिक वर्ग के प्रतिक है, लेकिन उपन्यासकारकीउद्देश पूर्ति में सहयोग देनेवाले है।

"राग-दरबारी" में शुक्ल जी ने पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय तीन शैलियों को अपनाया है। वर्णनात्मक शैली में पात्रों के व्यक्तित्व और उनके कार्यों को स्पष्ट चित्रण किया है। विश्लेषणात्मक शैली में पात्रों के भावों, विचारों और संवेदनाओं का चित्रण स्पष्ट रूप से किया है। "राग-दरबारी" समस्याप्रधान व्यंग्यात्मक उपन्यास होने के कारण इसमें नाटकीय शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग अधिक किया है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास में चरित्र-चित्रण के तत्वों और चरित्र-चित्रण की प्रणालियों का सफल प्रयोग हुआ है।

संदर्भ- सूची :-

१) डॉ॰ शंकर वसंत मुदगल -- "हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यास - पृष्ठ ३०५।

२) श्रीलाल शुक्ल — "राग-दरबारी" - पृष्ठ - 320

३) श्रीलाल शुक्ल — "राग-दरबारी" - पृष्ठ - 279

४) डॉ॰ सरजूप्रसाद मिश्र — "हिन्दी के सात उपन्यास" - पृष्ठ ११४।

५) — वही — - पृष्ठ ११४।

.....